- औषधीय पौधों की इकाई।
- फसल संग्रहालय।
- आधुनिक कृषि यन्त्र/मशीन।

केन्द्र द्वारा प्रदान की जा रही सेवायें :–

विभिन्न क्षेत्रों में प्रशिक्षण :– केन्द्र सस्य विज्ञान, पशुपालन विज्ञान, उद्यान विज्ञान, कीट/पादप रोग विज्ञान एवं गृहविज्ञान विषयों पर तकनीकी जानकारी किसानों को उपलब्ध कराती है।

नई किस्मों के बीज :– विभिन्न फसलों के उन्नतशील बीजों जैसे सरसो, गेहूँ, चना, जीरा, मेथी, सौंफ, तिल, जौ, मूंग, ग्वार, काचरा, काचरी, मक्का, टमाटर, भिन्डी तथा धामण घास आदि के बीज कृषकों को अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन में प्रदान किये जाते हैं।

सब्जियों की पौध उपलब्ध कराना :– सब्जी की उन्नतशील प्रजातियों के पौधे/बीज नर्सरी किसानों को उपलब्ध कराये जाते हैं।

फलों की पौध उपलब्ध कराना:– उन्नतशील प्रजातियों के फलों के पौधे जैसे बेर, अनार, केला, खजूर, अंजीर आदि तैयार करके किसानों को उपलब्ध कराया जाना।

डायग्नोस्टिक सेवा :– फसलों तथा जानवरों में कीड़े एवं बीमारी की पहचान तथा उनके निदान एवं रोकथाम करने के लिए वैज्ञानिकों द्वारा तकनीकी सलाह दी जाती है।

मृदा परीक्षण :– किसानों द्वारा अपने खेत से लाये हुए मृदा के नमूनों का परीक्षण केन्द्र द्वारा किया जा रहा है।

प्रसार कार्यक्रम एवं सेवायें :– प्रशिक्षण एवं प्रदर्शनों के अतिरिक्त अन्य प्रसार विधियों जैसे–कृषि मेलों में प्रदर्शनी, प्रक्षेत्र भ्रमण, किसान एवं पशुपालन गोष्ठी, विधि प्रदर्शन, पशुधन उत्पादन एवं स्वास्थ्य शिविर, पशुओं का टीकाकरण, रेडियों, दूरदर्शन, के.वि.के. आवाज संदेश सेवा तथा समाचार पत्रों व पत्रिकाओं के माध्यम द्वारा तकनीकी जानकारी ग्रामीण क्षेत्रों में जन–जन तक पहुँचाना।

प्रदर्शनी :– कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा विगत 10 वर्षों में 22 कृषि प्रदर्शनियों का आयोजन राष्ट्रीय, राज्य व जिला स्तर पर किया गया। इन कृषि प्रदर्शनियों में चार्ट, फोटोग्राफ, फ्लेक्सिचार्ट, पम्फलेट, लाइव सेम्पल आदि द्वारा आधुनिक कृषि तकनीकी को अच्छे ढंग से किसानों को समझा कर तकनीकी को अपनाने का सार्थक प्रयास किया गया।

रेडियो वार्ता :– आकाशवाणी जोधपुर पर केंद्र के वैज्ञानिकों ने 30 रेडियो वार्ताओं द्वारा किसानों को खेती, बागवानी, फसल संरक्षण, उन्नत बीज, पशुपालन, मछली पालन, कृषि यंत्रीकरण, मशरूम व औषधीय पौधों सम्बन्धी अन्य जानकारी प्रभावी व अच्छे ढंग से राज्य के कृषकों तक पहुंचाई।

के.वि.के. आवाज सन्देश सेवा :– आवाज सन्देश सेवा द्वारा गत वर्ष से किसानों को प्रतिदिन उनके मोबाईल फोन पर कृषि व पशुपालन सम्बन्धी उचित जानकारियां सरल व सीधी भाषा में किसानों तक पहुँचाया जाता है।

प्रकाशक : निदेशक, केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर 342 003
सम्पर्क सूत्र : दूरभाष :+91–291–2786584 (कार्यालय)
फैक्स :+91–291–2788706
ई–मेल : director@cazri.res.in
वेबसाइट : http://www.cazri.res.in
संपादकीय समिति : एस.के. जिंदल, निशा पटेल, पी.के. रॉय, हरीश पुरोहित

कृषि विज्ञान केन्द्र, काजरी, पाली – एक परिचय

एम.एल. मीणा
एम.के. चौधरी
धीरज सिंह
एम.एम. रॉय

केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान

कृषि विज्ञान केन्द्र

पाली–मारवाड़ (राज.) 306401

(02932) 256771

भाकृअनुप ICAR

कृषि विज्ञान केन्द्र, पाली – इस जिले के कृषको, पशुपालकों, ग्रामीण महिलाओं, युवाओं और प्रसार कार्यकर्ताओं में उनकी आधारभूत आवश्यकतानुसार तकनीकी ज्ञान एवं दक्षता विकसित करने के क्षेत्र में वर्ष 1992 से सेवारत है। कृषि विज्ञान केन्द्र के लिए वित्तीय सहायता भारतीय कृषि अनुसधांन परिषद्, नई दिल्ली द्वारा प्रदान की जाती है, जबकि दिशा निर्देशन एवं कार्यान्वयन केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान (काजरी) द्वारा किया जाता है। यह केन्द्र प्रशिक्षण एवं प्रसार गतिविधियों द्वारा विभिन्न शोध संस्थानों द्वारा विकसित जानकारी को प्रभावी ढंग से कृषकों तक पहुँचाने का कार्य कर रहा है जिससे प्रति इकाई उत्पादन बढ़ाया जा सके। 'करके सीखो' और 'करके सिखाओ' के सिद्धान्त पर आधारित यह केन्द्र सस्य विज्ञान, पशुपालन, उद्यान विज्ञान, कीट विज्ञान, गृह विज्ञान एवं कृषि प्रसार सम्बन्धी विषयों पर ग्रामीण अंचलीय एवं प्रांगणीय प्रशिक्षण वर्ष भर आयोजित करता है। प्रशिक्षण के दौरान यह ध्यान रखा जाता है कि सभी किसान ज्यादा से ज्यादा लाभान्वित हो। वार्षिक कार्यक्रमों का पूर्ण निर्धारण एवं इसका नियमित अनुसरण करना केन्द्र के प्रशिक्षण के आवश्यक अंग है।

प्रशिक्षार्थियों को नवीनतम तकनीकों को ग्रहण कराने तथा नई तकनीकों के सम्बन्ध में किसानों के अनुभव को शोध संस्थानों तक पहुचानें का कार्य भी केन्द्र द्वारा किया जा रहा है। राजकीय/गैर राजकीय/कृषि विभागों कृषि विश्वविद्यालयों, संस्थानों तथा क्षेत्रीय अनुसन्धान केन्द्रों के वैज्ञानिकों तथा प्रसार कार्यकर्ताओं से तकनीकी सहयोग तथा सामंजस्य स्थापित करना इस केन्द्र का मुख्य कार्य हैं।

स्थिति

कृषि विज्ञान केन्द्र काजरी, पाली जोधपुर रोड पर रेलवे स्टेशन से लगभग 5 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। जोधपुर रेलवे स्टेशन से इस केन्द्र की दूरी 65 किलोमीटर है।

उद्देश्य

- कृषि के संदोहन व संरक्षण के लिए समुचित गतिशील (टिकाऊ) खेती प्रबन्धन विकसित करना।
- परम्परागत खेती को छोड़कर आधुनिक तरीके से खेती करने के लिए किसानों को प्रोत्साहन देना, जो कि प्रयोगशाला से खेतों तक कार्यक्रम पर आधारित है।
- विभिन्न फसलों की बीमारियों एवं कीड़ों की रोकथाम के लिए उचित तकनीक का विकास करना एवं कृषि कार्यों में नवीनतम् यन्त्रों का प्रयोग कर खेती लागत को कम करते हुए अधिक उत्पादन प्राप्त करना।
- पशुओं के पोषण एवं देखभाल के लिए उचित तकनीक का विकास करना।
- जनपद के जल भराव वाले क्षेत्रों तथा तालाबों में मत्स्य पालन को विकसित करना।
- 'करके सीखो' पर जोर देते हुए ग्रामीण युवाओं कृषक महिलाओं एवं कृषकों के लिए कृषि एवं अन्य सम्बन्धित व्यवसायों में अल्प एवं लम्बी अविधि – के व्यवसायिक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों का आयोजन करना।
- ग्रामीण महिलाओं को तकनीकी, सामाजिक एवं आर्थिक रूप से सशक्त करना।
- ग्रामीण अंचलो में नवीनतम् तकनीकों की जाँच एवं उपज में कमी के कारणों का पता लगाना तथा पुर्नमुल्यांकन हेतु वैज्ञानिकों तक पहुँचाना।
- आधुनिक तथा प्रभावी कृषि तकनीकों को कृषकों तक पहुँचाने हेतु प्रचार–प्रसार एव प्रशिक्षण कार्यक्रमों को प्रभावशाली बनाना।
- बीज उत्पादन कर कृषकों को उन्नत बीज उपलब्ध कराना। पाली के शुष्क मैदानी क्षेत्रों के लिए गेहूं, सरसो, दलहनी, तिलहनी, शुष्क फल (जैसे बेर, आंवला, अनार, गोंदा इत्यादि), सब्जियों (जैसे काचरा, काचरी), मोटे अनाज एवं नकदी फसलों आदि की उन्नत प्रजातियों के बीज उपलब्ध कराना।
- सब्जी तथा फल उत्पादन को बढ़ावा देकर किसानों को अधिक लाभ पहुँचाना।
- भूमिहीन किसानों हेतु रोजगारपरक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना।
- बीजीय मसालों के उन्नत बीज व प्रशिक्षण प्रदान करना।

तकनीकी हस्तानान्तरण हेतु क्रियाकलाप :–

- वर्ष भर लघु एवं अल्पकालीन ग्रामीण अंचलीय एवं प्रांगणीय प्रशिक्षणों का आयोजन।
- कृषकों के प्रक्षेत्र पर नवीनतम् तकनीक के हस्तान्तरण हेतु दलहनी, तिलहनी, बीजीय मसालें, अनाज एवं शाकभाजी की फसलों पर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन आयोजित करना, जिससे कृषि तकनीक की उपयोगिता एवं स्वीकार्यता का आंकलन किया जा सके।
- प्रक्षेत्र सलाह सेवा एवं प्रचार सेवा कार्य।
- गाँवों में पशुओं हेतु समय–समय पर टीकाकरण स्वास्थ्य व उत्पादन शिविरों का आयोजन।
- कृषकों के लिए गोष्ठियों का आयोजन।
- गाँवों एवं केन्द्र पर उन्नत तकनीकी का प्रदर्शन।
- किसानों के लिए सरल भाषा के प्रसार साहित्य का लेखन।
- आकाशवाणी एवं दूरदर्शन द्वारा तकनीकी प्रसारण।
- गरीबी रेखा के नीचे जीवनयापन करने वाले लोगों को कुटीर उद्योगों का प्रशिक्षण देना।
- महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए स्वयं सहायता समूह का निर्माण करना।
- समन्वित पोषक तत्व, समन्वित कीट, समन्वित खरपतवार प्रबंधन व जैविक कृषि को बढ़ावा देना।
- व्यावसायिक फसल जैसे जीरा, ईसबगोल, अरंडी व सरसों आदि को प्रदर्शन व प्रशिक्षणों के माध्यम से बढ़ावा देना।
- बेर, आंवला, अनार, नींबू, लसोड़ा व सब्जियों की उत्पादन तकनीकी को बढ़ावा देना।
- अच्छे दुग्ध उत्पादन हेतु उन्नत नस्ल के साथ चारा व दाना प्रबंधन पर प्रशिक्षित करना।
- फव्वारा व बूंद–बूंद सिंचाई द्वारा जल को सही उपयोग द्वारा उत्पादन बढ़ाना।

प्रांगणीय सुविधायें :–

- केन्द्र के पास लगभग 40 हैक्टेयर का क्षेत्र है जिस में लगभग 20 हैक्टेयर क्षेत्र पर विभिन्न फसलों के उन्नतशील प्रजातियों का बीज उत्पादन किया जा रहा है।
- प्रशिक्षण हेतु भवन एवं प्रयोगशाला।
- नवीनतम् प्रगति से परिचित कराने हेतु वाचनालय व्यवस्था।
- शैक्षणिक प्रक्षेत्र एवं फार्म प्रदर्शन इकाईयाँ (वर्मी कम्पोस्ट, अजोला इकाई, मशरूम इकाई, केला इकाई, अनार इकाई, पौधशाला इकाई, मछली इकाई, चारा प्रदर्शन इकाई)।
- तकनीकी व लाभप्रद प्रकाशन एवं वितरण।
- फलदार पौधों का बगीचा – बेर, नींबू, फालसा, अंजीर, खजूर, केला, अनार व लसोड़ा।
- वर्षा जल संरक्षण
- वर्मीकम्पोस्ट इकाई।